Because of the soft attitude of the Government there, not only soft attitude but the compromising attitude of the Chief Minister himself, all the havoc is being created in Andhra Pradesh. He is responsible for that. So, it is high time that the Centre also rises to the occasion and sorts out the problem. If the Naxalites give up violence, individual terrorism, nobody has got objection to that, they are welcome to join the mainstream of our political life, but that is not so. There is no such statement pronounced by them and the Government on its own is allowing them a free hand to make use of arms. They are going in groups, parading villages and threatening people. We cannot simply be a mere spectator. All this is happening in Andhra Pradesh today. All the trains are being diverted from Telengana area. Trains going to Madras and other places, their routes are changed. So, i associate myself with the concern expressed by my frend Dr. Sivaji.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R K. PODDAR): You have made your point. Yes, Mr. Ratnakar Pandey.

SHRI YELAMANCHILI SIVAJI: Mr. Ratnakar Pandey also knows it because he happens to be the Observer of the Congress party there.

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka): We were the observers to oust you from the power.

SHRI YELAMANCHILI SIVAJI: I saw your role in Andhra Pradesh, in Guntur.

i

Need to take measures for the Development of Varanasi

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपका कृतज्ञ हूं कि आपने मुझे विशेष उल्लेख के माध्यम से वाराणसी और वाराणसी कमिश्नरी के विकास के संबंध में अपनी बात कहने का अवसर दिया है । बनारस तीन लोक से न्यारी नगरी है और पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश का सबसे प्रमुख केन्द्र है । इस कमिश्नरी से संसद में उतने प्रतिनिधि होते हैं जितने पूरे हरियाणा प्रदेश से हैं । लेकिन वहां विकास का जो कार्य है वह इस रूप में नहीं किया गया है जिस रूप मे होना चाहिए । टूरिस्ट्स सेन्टर बनारस है और वहां विश्व के कौने-कौने से लोग गंगा के किनारे बसे हुए घाटों को और दुनियां के महान विश्व-विद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को और बुद्ध की ज्ञान स्थली सारनाथ को देखने जाते हैं । परन्तु वहां से जो इतनी अधिक विदेशी मुद्रा टूरिस्ट सेन्टर होने के नाते हम देते हैं उसके बदले में हमें जो सुविधायें मिलनी चाहिएं वे नहीं मिलती हैं । इसलिए मैं मांग करूंगा आपके माध्यम से, सरकार से, और विशेषत: हाउसिंग मिनिस्ट्री से, इंटेग्रेटेड टाउन डेवलपमेंट स्कीम के तहत बनारस को भी उस योजना में लिया जाए । और सड़कें, पानी, बिजली इत्यादि जितनी भी सुविधाएं हैं सब इंटेग्रेटिड टाऊन डवलपमेंट स्कीम के तहत दी जाएं । हमारी कमिश्नरी में सीमेंट के बहुत बड़े कारखाने हैं और एशिया का सब से बड़ा सीमेंट उत्पादन का क्षेत्र है । लेकिन वहां जो मजदूर काम करते हैं उन्हें मास्क आदि नहीं मिला हुआ है । चुरक, डाला और चुनार आदि बड़े-बड़े औद्योगिक स्थल हैं, सरकारी नियन्त्रण में हैं । प्रदूषण पर यह सरकार बहुत ध्यान दे रही है, प्रदूषण रोकना अनिवार्य है और उन सीमेंट के कारखानों में काम करने वाले लोगों को जहां आर्थिक दृष्टि से उत्थान के लिए मदद दी जाए वहां प्रदूषण उनके फेफड़ों में न फैले और सीमेंट जो चूने के पत्थर से बनता है उसकी रन्ध्रवायु में जा कर उनके जीवन को कम न करे इन के लिए मास्क आदि देने की व्यवस्था की जाए । बनारस कृषि प्रधान क्षेत्र है और हमारे यहां धान की जितनी उपज होती है पूर्वांचल में कम इलाकों में होती है । धान का जो पुआल होता है वह पुआल जला दिया जाता है और हजारों टन पुआल जला दिया जाता है । बहुत दिनों से हमारी मांग है कि उस पुआल का उपयोग करते हुए कागज का एक बहुत बड़ा कारखाना बनारस में खोला जाए । मैं आपके माध्यम से मांग करूंगा कि कागज का कारखाना बनारस

[डा० रत्नाकर पाण्डेय]

में खोला जाए । सांस्कृतिक दृष्टि से दुनियां की सब से प्राचीनतम नगरी जहां की गलियों में पांडित्य खेलता है, बुद्धिजनित शुद्धति, बुद्धि को ज्ञान शुद्ध करने की उपासना जहां होती है । जहां चार-चार, पांच-पांच विश्वविद्यालय हैं, जहां मधुर मनोहर अतिवसुन्धरे सर्व विद्या की राजधानी है । उस नगरी में अभी तक टेलीविजन स्टूडियो का न होना चिन्ता की बात है। पहले जो स्कीम स्वीकृत हुई थी वह गोरखपुर चली गई । दूसरे टेलीविजन स्टूडियो की स्कीम इलाहाबाद में चली गई । इसी सदन में हमारे सूचना और प्रसारण मन्त्री ने आश्वासन दिया है कि इलाहाबाद में जमीन उपलब्ध नहीं हुई इसलिए टेलीविजन स्टूडियो को बनारस में **(समय की घंटी)** अपनी नगरी के विकास के विषय में दो मिनट कह लेने दीजिये ।

डा० बापू कालदाते (महाराष्ट्र) : बहुत महत्वपूर्ण नगरी की बात है ।

डा० रत्नाकर पाण्डेय : सब से प्राचीन नगर की बात है । टेलीविजन स्टूडियो को इलाहाबाद में जमीन न मिलने के कारण बनारस में ट्रांसफर करने की व्यवस्था की है उस काम को टाइम बाउंड ढंग से पूरा किया जाए और बनारस में जल्दी से जल्दी स्टेट गवर्नमेंट और अधिकारियों से जमीन ले कर इस काम को शुरु कराया जाए । इसको टाला न जाए । हमारा सब से ज्यादा एक्सपोर्ट पूर्वांचल का होता है । वहां पर टेलीफोन एक्सचेंज के भवन के निर्माण के लिए करोड़ों रुपये की योजना सरकार के पास पड़ी है लेकिन संचार मन्त्रालय कान में तेल डाल कर पड़ा हुआ है, कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है । दूर संचार भवन बनारस में बनाना चाहिये । आज भी परतन्त्रता के युग का सब से बड़ा हैड पोस्टआफिस है, उसका कोई विकास नहीं हुआ है, वह विकास भी होना चाहिए । डाक तार भवन जैसे बड़े-बड़े महानगरों में बनाए गए हैं उस तरह का डाक तार भवन वहां बनना चाहिये । हमारे पूर्वांचल में बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर और बलिया, पांच जिले आते हैं । इस कमिश्नरी की ओर से मैं इस सदन में अकेला प्रतिनिधि हूं। आपके माध्यम से मैं मांग करुंगा कि हमारी परकेपिटा इनकम जितनी है उसका एक चौथाई अंश भी हमारे विकास में आज तक 42 वर्षों में हमें नहीं मिला है । गरीबों के लिए जिनके साथ अन्याय हुआ है उनके लिए काम करने वाली यह सरकार है तो हमारा जो हिस्सा है, हम कोई कृपा और भीख नहीं मांग रहे हैं, बनारस के विकास के लिए हमारा जो अंश है पर केपिटा इनकम के हिसाब से वह हमें मिलना चाहिये । गलीचा उद्योग को कुटीर उद्योग घोषित किया गया है और पांच परसेंट इनसेंटिव कुटीर उद्योगों को बढ़ाने वाली इस सरकार ने दिया है। गलीचा उद्योग तीन सौ करोड़ रुपये का फारेन एक्सचेंज प्रति वर्ष देता है और सरकार को दो सौ करोड़ रुपये का फारेन एक्सचेंज बनारसी साड़ियों और बनारसी वस्त्रों के कारबार से मिलता है । इन उद्योगों के विकास के लिए प्रापर ढंग से रा मैटीरियल मिलना चाहिए.... **(समय की घंटी)**...रेशम मिलना चाहिए और जो हमारा हिस्सा है वह हमें मिले । इसके साथ ही अंत में मैं कहना चाहूंगा कि जी०टी० रोड पर, गंगा पर एक नया पुल बनवाने का काम हमारी सरकार ने शुरु किया है, तेजी से काम हो रहा है, उसमें किसी तरह का व्यवधान न आये । इसम जी०टी०रोड पर एक साइड से आने की और एक साइड से जाने की व्यवस्था हो जायेगी क्योंकि घंटों लोग खड़े रहते हैं इतना हैवी ट्राफिक रहता है । उसको तेजी के साथ बढ़ाया जाये और नेशनल स्तर पर टूरिस्ट सेंटर घोषित करने के लिए सरकार कार्यवाही करे । हमारी बहुत सी ऐसी जमीन हैं जो अनुर्वर हैं, कृषि योग्य नहीं हैं उसको कृषि योग्य बनाने के लिए सरकार कार्य करे "जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी" । अपनी धरती के प्रति, अपनी जन्म-भूमि के प्रति आस्था होनी चाहिए और उसी आस्था के वशीभूत

इस सरकार से आपके माध्यम से मैं मांग करूंगा--संरोग से हमारे हाउसिंग मिनिस्टर साहब यहां हैं--कि इन्टेग्रेटिड टाउन डेवलपमेंट स्कीम के तहत आप बनारस को जरुर सम्मिलित करें और जिस तरह से बनारस का विकास हो रहा है उसको देखते हुए कोई डेवलपमेंट स्कीम फ्यूचर के लिए नगर विकास मंत्रालय की ओर से ले आइये ।

बलिया में बाढ़ बहुत आती है और गांव के गांव बह जाते हैं । प्रतिवर्ष बाढ़ आती है और प्रति वर्ष, हजारों गांव बह जाते हैं । बाढ़ नियंत्रण के लिए बहुत पहले से मांग हो रही है । आपका जल संसाधन मंत्रालय कोई ऐसी योजना निर्धारित करे कि जो बरसात में पानी गंगा की नादेयों मे बढ़ता है और हजारों गांव बह जाते हैं, मवेशी बह जाते हैं वह सब रुकें और उस पानी का उपयोग सिचाई के लिए हो सके चाहे बांध बनाकर हो चाहे और किसी दृष्टि से लेकिन इस काम को अवश्य किया जाये । इन्हीं शब्दों के साथ बनारस के विकास की जो उपेक्षा हुई है उस उपेक्षा को दूर करने का संकल्प आपके माध्यम से यह सरकार ले, इस ओर मैं ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं । धन्यवाद ।

डा० बापू कालदाते : कई चीजें बहुत सालों से आपके जमाने से पड़ी हुई हैं ।

डा० रत्नाकर पांडेय : हमारे जमाने में बहुत कुछ हुआ है, उसको रोकिए मत, करवाइये ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): Honourable Members, there are still about ten Members to make their Special Mentions. So, I request all those who are going to speak to restrict their Special Mentions to three minutes. Prof. Chandresh P. Thakur.

. Crisis being faced by Universities in. Bihar

PROF. CHANDRESH P. THAKUR (Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you very much for giving me this opportunity. Once you come to know about the subject, you will make me an exception to the rule which you have just laid down.

DR. BAPU KALDATE (Maharashtra): All exceptions!

THE VICE-CHAIRMAN' (DR. R, K. PODDAR): I know all those things that you are going to say.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR: Sir, you; are an ex-Vice-Chancellor and a teacher. I am going to talk about the problems of education, and you will see the value of it.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. R. K. PODDAR): You can have a special discussion.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR: Sir, through this House I wish to draw the attention of this Government and, particularly, of the Prime Minister, who also happens to be the Education Minister, to the state of affairs with regard to education in Bihar. We have a gentleman Cabinet Minister sitting, but we have to accept that he is not an Education Minister. I only hope that he will have the persuasive skill to see that the Prime Minister lends his ears and does something about it.

Sir, education in Bihar, particularly university education, is facing a serious crisis. This is common knowledge, this everybody in Delhi or in any other part of India outside Bihar knows and realizes the gravity of that, but nothing much is being done to bring about course correction. At the national level, Mr. Vice-Chairman, We are tring yto make good strides in terms of improvement of quality and expansion ofthe coverage of education at all levels—at the primary secondary and tertiary levels—but Bihar is facing a deteriorating situation: it is a reversal of the national trend.

Bihar has a long tradition of good education at all levels. It has contributed to the fields of scholarship in